• लॉकडाउन के दौरान गेम के लती कई किशोरों ने जान दी • डाटा की निजता एवं गोपनीयता के लिहाज से भी खतरनाक

पबजी के फेर में युवाओं ने पैसे के साथ जान भी गंवाई

चिंताजनक

नई दिल्ली | हिन्दुस्तान ब्यूरो

भारत में पबजी जैसे गेमिंग एप राष्ट्रीय सुरक्षा, डाटा की निजता एवं गोपनीयता के लिहाज से खतरा हैं ही, इनके चिंताजनक सामाजिक और आर्थिक पहलू भी सामने आए हैं। ये गेमिंग ऐप युवा पीढ़ी के लिए जानलेवा बन गए हैं।

पिछले कुछ वर्षों की बात छोड़ दें, लॉकडाउन के दौरान ही ऐसे दर्जन भर से ज्यादा वाकये सामने आए, जिनमें पबजी के टॉस्क को पूरा करने के लिए गेमिंग ऐप के लती युवाओं घर की सारी कमाई डुबो दी। चंडीगढ़ के खरार इलाके के एक सरकारी कर्मी को 16 ... चूना लगा, जिसके बेटे ने ... रकम पबजी के कई चरणों ... करने की फीस और गेमिंग से जुड़े वर्चुअल उपकरण खरीदने में खर्च कर दी। ऐप के जानकारों का कहना है कि प्लेयरअननोन्स बैटलग्राउंड यानी (पबजी) में विशेष सुरक्षा उपकरणों से लैस योद्धा दिखाए जाते हैं। अगर आपको अगले चरण का खेल खेलना है तो इन डिजिटल सुरक्षा कवच और हथियारों को खरीदना पड़ता है। तभी आपके योद्धा भी एडवांस स्टेज में ठहर पाते हैं।

देश के कई राज्यों में खुदकुशी की घटनाएं: तेलंगाना, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु जैसे शहरों में भी ऐसी घटनाएं जून-जुलाई में हुई हैं, जहां गेमिंग ऐप के लती बच्चों ने लाखों रुपये फूंक दिए या फिर गेम का टॉस्क पूरा न कर पाने से क्षुब्ध होकर जान दे दी। गुजरात के आणंद जिले में बुधवार को ही एक किशोर ने पबजी खेलने से मना करने पर जहर खाकर खुदकुशी कर ली।

पाकिस्तान में बैन तो भारत में क्यों नहीं: पाकिस्तान के सिंध प्रांत में 16 साल के एक लड़के ने पबजी का टॉस्क पूरा न कर पाने पर जान दे दी। इसके बाद देश के कई शहरों में विरोध प्रदर्शन हुए। सरकार ने दो जुलाई को गेमिंग ऐप पर प्रतिबंध लगा दिया, जो भारत में सोशल मीडिया पर ट्रेंड करता रहा।

बढ़ रही जान देने की प्रवृत्ति

- **20 जुलाई** पुलवामा में पबजी के लती 13 साल के लड़के ने आत्महत्या की
- **14 जुलाई** खेल में हार से हताश आंध्र के चित्तूर जिले में कक्षा आठ के छात्र ने जान दी
- **08 जून** राजस्थान के कोटा में गेम के लती कक्षा नौवीं के छात्र ने खुदकुशी कर ली
- **22 जून** महाराष्ट्र के यवतमाल में युवक ने जान दी, दिन में 16 घंटे पबजी खेलता था
- **02 जुलाई** पाकिस्तान के लाहौर में दो हफ्तों के भीतर तीसरी आत्महत्या पबजी से जुड़ी

भारत पबजी के लिए सबसे बड़ा बाजार

टिकटॉक जिस प्रकार भारत में सबसे बड़ी वीडियो शेयरिंग साइट थी, उसी तरह गेमिंग ऐप में पबजी की धमक है। टॉवर डाटा के अनुसार, पबजी के लिए भारत विश्व में सबसे बड़ा बाजार है। इसके अलावा मॉन्स्टर स्ट्राइक, ऑनर ऑफ किंग्स, पजल एंड ड्रैगन्स, कैंडी क्रश सागा, पोकेमान गो, क्लैश ऑफ क्लैन जैसे गेम भी भारत में पैठ बढ़ा रहे हैं।

7.34 करोड़ दुनिया भर में पबजी के डाउनलोड

1.75 करोड़ से ज्यादा डाउनलोड भारत में ऐप के

01 अरब डॉलर के करीब भारत की गेमिंग इंडस्ट्री

दिनोंदिन बढ़ रही कमाई

- 08वां सबसे सफल मोबाइल गेम ऐप दुनिया में
- 03 अरब 20 करोड़ डॉलर का सालाना राजस्व
- 20 करोड़ डॉलर की कमाई सिर्फ जुलाई माह में

(स्रोत : टॉवर डाटा और सेंसर टॉवर)

पहली पाबंदी के बाद बदली नीति

भारत ने 29 जून को टिकटॉक, हेलो समेत 59 ऐप पर प्रतिबंध लगाने का ऐलान किया था। इसके तुरंत बाद पबजी ने अपनी प्राइवेसी पॉलिसी में बदलाव किया। संशोधित नीति में उसने कहा था कि पबजी मोबाइल सर्वर के भारतीय यूजर्स का डाटा भारत में सुरक्षित रखा जाता है।

सबसे तेजी से उभरता गेमिंग ऐप

मोबाइल ऐप विश्लेषक फर्म सेंसर टॉवर के मुताबिक, पबजी दुनिया में सबसे तेजी से उभरता गेमिंग ऐप है, क्योंकि यह हर माह करीब 10.8 फीसदी की दर से बढ़ रहा है। जून 2019 पबजी का मासिक राजस्व 15 करोड़ डॉलर के करीब था जो इस साल लॉकडाउन के दौरान मई-जून में 27 करोड़ डॉलर तक पहुंच गया।

पांच सबसे ज्यादा कमाई वाले गेम

1. पबजी मोबाइल (टेंसेंट समर्थित)
2. ऑनर ऑफ किंग्स (टेंसेंट)
3. मॉन्स्टर स्ट्राइक (मिक्सी)
4. पोकेमान गो (नियान्टिक)
5. रोब्लोक्स (रोब्लोक्स)

साइबर अपराध के दायरे में

ऐसे गेमिंग ऐप साइबर धोखाधड़ी, साइबर बुलीग जैसे अपराधों की श्रेणी में भी आते हैं। साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ और दिल्ली हाईकोर्ट में अधिवक्ता विशाल कुमार का कहना है कि बच्चों को डराना, करियर बर्बाद होने का डर दिखाना, गेमिंग के खिलाड़ियों के बीच प्रतिष्ठा धूमिल करना जैसी बातें साइबर बुलिंग के तहत अपराध हैं। बच्चों को फुसलाकर लाखों रुपये ऐंठना साइबर धोखाधड़ी है।

ब्लूव्हेल को कौन भूलेगा भला

साइबर विशेषज्ञों ने कहा कि दुनिया भर में सैकड़ों बच्चों की जान लेने वाले ब्लूव्हेल गेमिंग ऐप को कौन भूल सकता है। इसके चंगुल में फंसे बच्चे परिवारवालों को भी अपनी पीड़ा नहीं बता पाते और भयानक परिणाम सामने आता है।

विशेषज्ञ की राय

देश को राष्ट्रीय ऐप पॉलिसी की जरूरत

साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ पवन दुग्गल का कहना है कि गेमिंग ऐप ऊपर से तो मनोरंजन, ज्ञानवर्धक लगते हैं, लेकिन आप जितना अंदर प्रवेश करते हैं, उतना ही उत्पीड़न के चंगुल में फंसते चले जाते हैं। उन्होंने कहा कि अलग-अलग ऐसे कदम उठाने की बजाय राष्ट्रीय ऐप पॉलिसी की जरूरत है। दुग्गल ने कहा कि भारत के आईटी ऐक्ट में ऐप को लेकर प्रावधान नहीं है। हमें सिलिकन वैली के केंद्र कैलिफोर्निया से सीखना चाहिए जहां ऐप के लिए सेल्फ रेगुलेटरी कोड ऑफ कंडक्ट है।

हिंसक मनोवृति को बढ़ावा

ऐसे गेमिंग ऐप हिंसा, घृणा और तमाम तरह के मनोविकारों को जन्म देते हैं। मनोवैज्ञानिक डॉ. मालिनी सबा का कहना है कि गेमिंग ऐप के लती बच्चों में धैर्य, सहनशीलता और सामाजिक भागीदारी भूल जाते हैं। आइसोलेशन में चले गए ऐसे बच्चों द्वारा आत्मघाती कदम उठाने का खतरा बढ़ जाता है, क्योंकि उन्हें डिजिटल दुनिया में ही जो बताया जाता है, उसे ही वो सच मानते हैं। हिंसक प्रवृति वाले पबजी जैसे गेम उग्र विचार, व्यवहार और भावनाओं को जन्म देते हैं। ये गेम गैंग बनाकर दूसरों पर हमला करने जैसी आदतें सिखाते हैं। जब एक बार लत लग जाती है तो यूजर सामाजिकता भूल जाता है।

चीन की डिजिटल घुसपैठ पर भारत का करारा प्रहार

भारत ने न केवल जमीनी मोर्चे पर चीन के विस्तारवाद के पहियों को रोक दिया है, बल्कि डिजिटल क्षेत्र में उसकी बढ़ती घुसपैठ पर करारा प्रहार किया है। विशेषज्ञों का कहना है कि वर्ष 2020 तक भारत में 75 करोड़ स्मार्टफोन धारक होंगे, लिहाजा अमेरिका या चीन पर निर्भरता की जगह भारत को हर क्षेत्र में डिजिटल ढांचा खड़ा करने की जरूरत है।

75 करोड़ स्मार्टफोनधारक 2020 तक, 23 भाषाओं वाला भारत बड़ा बाजार

04 अरब डॉलर का निवेश भारतीय स्टार्टअप में चीन का

18 टेक स्टार्टअप में चीन की पूंजी 30 बड़े यूनीकॉर्न में

ऐप पर अंकुश

- 29 जून : वीडियो शेयरिंग टिकटॉक, हेलो समेत समेत 59 ऐप पर प्रतिबंध लगाया
- 27 जुलाई : टिकटॉक और अन्य के 47 क्लोन ऐप पर रोक लगाई गई
- 02 सितंबर : 118 ऐप (पबजी, वीचैट समेत) पर केंद्र सरकार ने कार्रवाई की

46 ऐप चीन से जुड़े

सेंसर टॉवर की रिपोर्ट के अनुसार, 2019 के अंत तक मीडिया एंटरटेनमेंट समेत देश के 100 लोकप्रिय ऐप में 46 चीन से जुड़े हैं। ये ऐप चीन डेवलपर द्वारा विकसित किए गए हैं और उनके सर्वर चीन में हैं।

5जी से चीन बाहर

सरकार ने 23 जुलाई को राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देते हुए जमीनी सीमाओं से जुड़े देशों के लिए निवेश संबंधी नियमों में बदलाव किया। इससे जेडटीई, हुवावेई जैसी चीनी कंपनियां भारत के 5जी ट्रायल में हिस्सा नहीं ले पाएंगी। ऐसे निवेश के लिए सरकार की मंजूरी आवश्यक होगी।

भारतीय स्टार्टअप में चीन की पैठ

- **टेंसेंट**- बाइजू, ओला, ड्रीम11, फ्लिपकार्ट, स्विगी, हाइक, प्रैक्टो समेत 15 स्टार्टअप में
- **अलीबाबा**- पेटीएम, बिगबास्केट, पेटीएम मॉल, स्नैपडील, जोमैटो, रैपिडो, टिकटनॉउ समेत दस
- **श्याओमी**- हंगामा, शेयरचैट, रैपिडो, सिटी मॉल, जेस्टमनी समेत सौ स्टार्टअप में हिस्सेदारी
- **शुनवेई कैपिटल**- जोमैटो, शेयरचैट, क्रैजीबी, मीशो, लोन्टैप समेत 17 में निवेश
- **फोसुन ग्रुप**- एजिंगो, डेल्हीवेरी आदि की 8.5 करोड़ पूंजी लगी
- **टीआर कैपिटल**- फ्लिपकार्ट, लेंसकार्ट, अर्बनलैडर, बिगबास्केट का 11 करोड़ डॉलर निवेश

स्रोत : गेटवे हाउस

स्वदेशी प्रोत्साहन की जरूरत

चीनी कंपनियों पर अंकुश के साथ टाटा, इन्फोसिस, रिलायंस आदि को देसी स्टार्टअप में निवेश के लिए प्रोत्साहित करना होगा, ताकि पूंजी की कमी न हो। केंद्र का 20 हजार करोड़ का स्टार्टअप फंड अच्छा कदम है।

चीन के खिलौनों पर भी नजर

भारत चीन के खिलौनों पर भारी आयात शुल्क लगाने की तैयारी में है। डीलर्स का दावा है कि देश में बिकने वाले 75 फीसदी खिलौने मेड इन चाइना हैं, जिससे चार हजार से ज्यादा छोटे-बड़े घरेलू निर्माताओं का कारोबार ठप है।

स्टार्टअप इकोसिस्टम के लिए निवेश, नीति का अनुकूल माहौल जरूरी है। अगर चीन से निवेश अटकता है तो भारतीय स्टार्टअप को अमेरिका जैसे देशों के निवेशकों को लुभाना चाहिए। वैकल्पिक रास्तों की तलाश के बिना डिजिटल इंडिया आगे नहीं बढ़ सकता।

-सौम्या प्रिया, वर्कशॉप की संस्थापक (स्टार्टअप व ग्लोबल इन्वेस्टर्स की एकमात्री कंपनी)

Date: 04 Sep, 2020 | Page: 12 | Language: Hindi | Media Vertical: Print | Readership: 3,600,000
Circulation: Delhi, Haryana (Faridabad), Bihar (Patna, Muzaffarpur, Gaya, Bhagalpur and Purnea), Jharkhand (Ranchi, Jamshedpur and Dhanbad), Uttar Pradesh (Lucknow, Varanasi, Meerut, Agra, Allahabad, Gorakhpur, Bareilly, Moradabad, Aligarh, and Kanpur) and Uttarakhand (Dehradun, Haridwar, Haldwani). Apart from these, the paper is also available in key towns like Mathura, Saharanpur, Faizabad.